Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11512072

Roll No. 24029000612
Total Mark 64/75.00

Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A010901T - Adhunik Hindi Kavya

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1	4/5						
2	4/5						
3	5/5						
4	4/5						
5	4/5						
6	5/5						
7	4/5						
8	4/5						
9	5/5						
10	0/15						
11	0/15						
12	12/15						
13	0/15						
14	0/15						
15	13/15						
16	0/15						
17	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 11-11-2025 Shift: .... Room No.: 05

Paper Code: A010901T Subject: Hindi Year/Sem: 3rd

Name of Candidate: SAHASTRANSHU MISHRA

Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

Signature of Candidate: सहस्त्रांशु मिश्रा

Signature of Invigilator

COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures .... Max. Marks ....

Total Marks in Words ....

A010901T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: M.A.

Session: 2025-26 Year/Semester: 3rd sem

Subject: Hindi

Paper Code: A 0 1 0 9 0 1 T

Exam Date: 1 1 1 1 2 0 2 5

Name of Candidate: SAHASTRANSHU MISHRA

Father's Name: KAMLESH KUMAR MISHRA

महाविद्यालय का कोड / College Code: K N 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड / Exam Centre Code: K N 0 L

परीक्षा का प्रकार / Type of Exam: संस्थागत Regular (●) / भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ( ) / व्यक्तिगत Private ( ) / बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ( )

ANSWER BOOKLET NO.

11512072

A010901T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 1 9 5 6 8

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 9 0 1 T

Signature of Candidate: सहस्त्रांशु मिश्रा

Signature of Invigilator

C.S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बीजक में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संशोधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में कागज न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no. corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex-Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

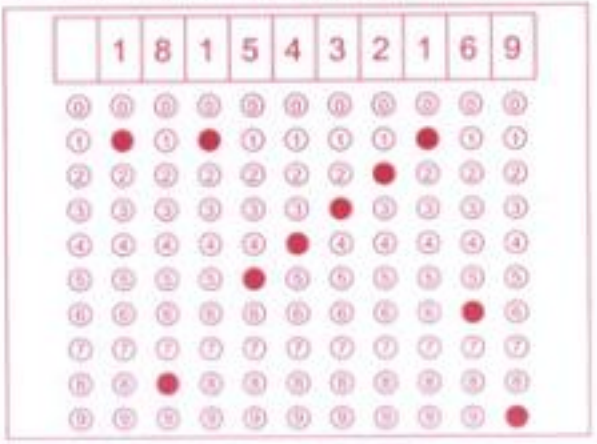

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

खण्ड-अ

(1)

'साकेत' का नामकरण

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित द्विवेदी युग का कालजयी महाकाव्य 'साकेत' की भूमिका में लिखा है –

" राम, तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।"

महाकाव्य का नाम भी महाकाव्य के अन्य अंगों के समान महत्वपूर्ण तथा सार्थक होना चाहिए 'साकेत' अर्थात अयोध्या नाम देकर गुप्त जी ने यह सशक्त रुप में बतलाया है कि यह रामकथा का पुनर्पाठ है जो विरहिणी उर्मिला के अंतर्मन एवं त्याग पर टिका हुआ है –

" व्रत तेरा रहा अखण्ड
पावन पुण्य महान "

चूंकि यह सम्पूर्ण महाकाव्य ही राम जी के वनागमन के उपरांत पुनः अयोध्या राम, लक्ष्मण, सीता के साथ वापस आने पर लक्ष्मण जी की प्रियतमा उर्मिला

Paper Code

02

की दृष्टि से लिखा है जिसमें सम्पूर्ण अयोध्या नगरी उत्सव तथा उल्लास के के रंग में सराबोर है—

"है यही साकेत नगरी.....
स्वर्ग से मिलने गगन में आ रही।"

कथानक, नायिका, सर्ग की श्रेष्ठता से बंधा हुआ यह महाकाव्य जिसके लिए नामवर सिंह ने लिखा है—
"यह पूर्ण काव्य पिपासा को शांत करने का उपाय है।"
अपने नामकरण में भी भली भाँति 'साकेत' अर्थात अयोध्या से महाकाव्य को विशिष्ट अर्थ एवं सार्थकता प्रदान करता है।

(2)

कामायनी के सर्ग नाम

महाकवि जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' छायावाद के आधार स्तंभ प्रसाद जी द्वारा एक अप्रतिम रचना है, जिसमें मनु, श्रद्धा एवं [illegible] प्रतीकों से प्रसाद जी [illegible] जीवन के मधुरिम आयामों का दर्शन प्रस्तुत किया है -

"दुख की पिछली रजनी बीत
विकसता सुख का नवल प्रभात।"

कामायनी कुल [illegible] सर्गों में विभक्त है जो कि [illegible] से लेकर आनंद की यात्रा सुनिश्चित करते हैं -

कामायनी के सभी सर्ग इस प्रकार हैं -

⇒ चिंता सर्ग ⇒ ईर्ष्या सर्ग

⇒ श्रद्धा सर्ग ⇒ वासना सर्ग

⇒ लज्जा सर्ग

⇒ इड़ा सर्ग

Do Not Write anything in this Portion

पाठ्यक्रम में उल्लिखित श्रद्धा एवं चिंता (इड़ा) सर्ग में प्रसाद जी मनुष्य को प्रेम एवं ज्ञान के संतुलन में पूर्णता का बोध घटित होता है, का संदेश देते हैं — " जहाँ प्रसाद छायावाद को नयी पहचान देते हैं तो कामायनी इसके प्रतिकार के रूप में स्थापित है।"

— भारत भूषण अग्रवाल

"इस प्रकार से कामायनी परिवर्तन के साथ संतुलनमय यात्रा में चिंता से आनंद तक साथ निभाती है।'

(3)

"मौन निमंत्रण" कविता की संवेदना :-

'प्रकृति के सुकुमार' कहे जाने वाले कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने अनेकानेक कविताओं की रचनाओं से जन-जन की काव्य अभिलाषाओं को अभिसिंचित किया है। कविता मौन निमंत्रण "प्रकृति के मौन में आत्मा का तादात्म्य" पर आधारित है।

" ना जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन "

यह कविता मौन के दो पक्षों पर आधारित है, जिसमें मौन तथा निमंत्रण इस प्रकार हैं —

मौन — स्वर या ध्वनिहीन स्थिति अर्थात प्रकृति की शून्यता या शांति

निमंत्रण — आह्वान जो स्वयं को चरम शांति की ओर बुला रहा है अर्थात प्रेरित करता है।

'मौन निमंत्रण' कविता में कवि स्वयं को प्रकृति के सान्निध्य में समर्पित कर परम शांति एवं स्वयं को खोजने की बात कह रहे हैं।

" प्रथम रश्मि का आना रंगिनी
तुमने कैसे पहचाना,
बतला गया है अंतर्यामिनी
सब कुछ तुमको, वह है कौन ?"

---

(4)
लंबी कविता की अवधारणा :-

लंबी कविताएं एक प्रकार की 'आत्मस्वीकृतिपरक' एवं संवाद की अवधारणा पर आधारित होकर समाज के चेतना के आयामों पर प्रकाश परिवर्तन करती हैं। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविता 'अंधेरे में'

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

इसका एक उदाहरण जिसमें वे सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन करते हैं —

लंबी कविता [illegible] : चार आधारों पर टिकी [illegible] है —

i> चेतना — कविता किस चेतना की परिणति या उपज है।

ii> पक्ष — कविता कितने पक्षों का स्पर्श कर रही है।

iii> छंद / मुक्तक — यह मुक्त होकर विस्तार प्राप्त करती

iv) स्वंय की अभिव्यक्ति — यह अपने को एक पक्ष मानकर भी लिखी जाती है —

इस प्रकार लंबी [illegible] विशाल विचार समूहों को [illegible]कार करती संवादात्मक एवं 'आत्मस्वीकृतिपरक' शैली पर आधारित अभिव्यक्ति की व्यंजना है।

" छंदों के बंधन कठिन तोड़कर
विस्तृत काव्य रचा जाए
भाव एक हो या अनेक
हितकारी स्वर बह जाये।"

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

08

(5)

'असाध्य वीणा' की पृष्ठभूमि -

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी की कविता 'असाध्य वीणा' तप एवं साधना में समाहित एक योगी एवं साधक की कथा है -

" राजा के पास एक अत्यंत विशिष्ट वीणा है जिसे कोई बजा नहीं पा रहा है; अनेकानेक महारथी कलाकार उसे बजाने के लिए प्रयत्नरत परंतु अंत में एक महान योगी राजा के दरबार में स्पर्श मात्र से उस वीणा को बजा कर सभी को सम्मोहित कर देते है।"

रहस्य यह था कि वह वीणा जो महान किरीट के वृक्ष से बनी थी। वह योगी इसी वृक्ष के आश्रय में निवास कर पले-बढ़े थे।

"आ गए प्रियवंद,
केशकम्बली गुफा गेह।
राजा ने आसन दिया"।

वृक्ष के साथ स्वयं को समर्पित कर प्रियवंद ने वीणा वादन किया और –

'डूबे सब एक साथ
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।"

---

(6)

'अंधेरे में' कविता का कथानक –

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की यह कविता समाज की कुरीतियों पर चोट करती हुई सशक्त अभिव्यक्ति है। कथानक में कवि मुक्तिबोध समाज की उस परिस्थिति का वर्णन करते हैं; जो समस्याओं से जूझ रही है, अर्थात ऐसा परिवेश

है, जहाँ सब कुछ अन्याय की परिपाटी पर घटित हो रहा है, लोगों का नैतिक पतन हो रहा है। मनुष्य की संवेदनाएं मर चुकी हैं।

कवि स्वयं की स्थिति भी उसी मंथरे में देख रहा है, परंतु वह भी कुछ कर नहीं पा रहा है, तथा समाज के सभ्रांत लोग जिनको बीड़ा उठाना चाहिए, परिवर्तन का वे भी चुप हैं और कुछ कर नहीं रहे हैं—

"पीछे-पीछे रात थी,
तारों का इक लश्कर लिए
रेल की पटरी पे,
सूरज चल रहा साथ में।"

यह कविता लंबी कविताओं में गिनी जाती है, जो प्रतीक रूप प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है।

Do Not Write anything in this Portion

(7)

'अकाल और उसके बाद' का बिम्ब विधान -

अकाल और उसके बाद कविता बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' / 'नागार्जुन' जी की कविता है - जिसका बिम्ब इस प्रकार है -

बिम्ब	अर्थ / भाव
अकाल	विनाश / दुर्गति
पशु	सहार या नाश
खेत	उपज एवं भोजन
अधिकारी	कर्ता -धर्ता
जल	नवजीवन / आशति

इसमें कवि ने उस स्थिति का वर्णन किया है, जब अकाल पड़ चुका है, और तरफ सिर्फ शोक ही शोक है, मृत पशु पड़े और जिम्मेदार

Do Not Write anything in this Portion

अधिकारी अपने सुखों में विलास करते नगरों में ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसी व्यवस्था के प्रति आक्रोश कविता में मुखरित हुआ है।

(8)

कुरुक्षेत्र के छठवें सर्ग का कथानक

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित यह काव्य द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) की विभीषिका को देखकर 1946 में लिखा गया।

छठे सर्ग में भीष्म पितामह और धर्मराज युधिष्ठिर के बीच युद्धोपरांत का संवाद है। जिसके माध्यम से दिनकर जी मानवता की रक्षा का संदेश

इस जनजीवन को दे रहें कि मानवता की रक्षा ही मनुष्यत्व का प्रमुख धर्म है। तथा इसके लिए शांति एवं प्रेम ही सर्वप्रमुख उपाय है, जिसके लिए यह युद्ध एवं विभीषिका का त्याग करना ही होगा।

Do Not Write anything in this Portion

(9)

मुक्त छंद की अवधारणा

हिंदी काव्य विभिन्न प्रकार के छंदो से शोभायमान है, जिसमें समय-समय पर परिवर्तन भी हुए हैं—

भारतेंदु युग
द्विवेदी युग
छायावादी युग
} परंपरागत छंदो पर आधारित काव्य रचना

प्रगतिवादी
प्रयोगवाद
नयी कविता
} नये छंद प्रयोग, छंदमुक्त काव्य एवं बिम्ब

अर्थात अब कविता का प्रवाह छंद के बंधन में बंधकर नहीं बल्कि भावना एवं विचार

Do Not Write anything in this Portion

के रथ पर आरूढ़ होगा। वह
स्थिति मुक्त छंद कहलाती है।

यहाँ छंदो की मात्रा गणना नहीं बल्कि चेतना, संदेश, स्वर को प्रमुखता दी जाती है।

नव गति नव लय ताल छंद नव
जलद मन्द्र रव नव पर, नव स्वर दे।

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड-ख

(12)

अंश परिधि – अवतरित हुआ - - -
- - - पार तिरे।

सन्दर्भ — प्रस्तुत काव्य पंक्तियां हमारे प्रथम [illegible] पत्र 'आधुनिक हिंदी काव्य' के अंतर्गत 'असाध्य वीणा' नामक कविता से अवतरित हैं, जिसके रचियता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी हैं।

प्रसंग :- काव्यखण्ड में उस समय का उल्लेख है जब दरबार में कोई भी संगीतकार वीणा को बजा नहीं

Do Not Write anything in this Portion

पाता और प्रियवदं अपने स्पर्श से स्व वीणा के संगीत के से सभी को सम्मोहित कर देते हैं।

व्याख्या :- महान केरी के वृक्ष की लकड़ी से बनी वह वीणा जब प्रियवदं केशकम्बली के आसन के सम्मुख रखी गयी और प्रियवदं ने मन स्वयं को वीणा के प्रति समर्पित कर नमस्कार किया एवं जब वादन के स्पर्श कर वीणा के तार छेड़े तो वह वीणा जिससे दक्ष संगीतकार बजा भी नहीं पाये, संगीतमय हो गयी ऐसा संगीत प्रकट हुआ कि सभी लोग जिस प्रकार स्वयं की चेतना खोकर

DO NOT write anything in this portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

अखंड शांति को प्राप्त करता हूं।
स्वयंभू के समान, ब्रह्म जैसा मौन सभा में प्रकट हुआ। निःस्तब्धता का वातावरण हर ओर व्याप्त था। कोई भी इससे अछूता नहीं था। क्या राजा, क्या रानी मंत्री सामंत सब प्रियंवद के संगीत में लीन हो डूब गए। संगीत का प्रभाव ऐसा कि सब डूबे तो एक साथ परंतु सबकी तंद्रा अलग-अलग समय पर टूटी। सबने विभिन्न स्थिति में अपनी अपनी चेतना वापस पायी।

Paper Code

19

काव्य सौंदर्य

रस- शांत

छंद - मुक्त

अलंकार - अनुप्रास

भाषा- खड़ी बोली हिंदी

शैली - प्रवाहमय

गुण - प्रसाद

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड-ग

कामायनी का अंगीरस

कामायनी जयशंकर प्रसाद जी का कालजयी महाकाव्य जिसमे विभिन्न सर्ग है —

⇒ "कौन तुम संसृति [illegible] तीर
तरंगो से फेंकी मणि एक
कर रहे निर्जन का चुपचाप
प्रभा की धारा से अभिषेक।"

यहाँ पर शांत रस का अंगीकार हुआ है —

⇒ दुख की पिछली रजनी बीत
विकसता सुख का नवल प्रभात

यहाँ पर भी शांत रस स्थापित किया गया है।

Do Not Write anything in this Portion

⇒ "नील परिधान बीच सुकुमार
खिल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग"
श्रद्धा का वर्णन शृंगार रस के
माध्यम से किया गया है।

⇒ हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक तपस्वी देख रहा था,
खुले नयन से प्रलय प्रवाह
यह शांत रस का उत्तम उदाहरण
है।

⇒ "इड़ा उठी दिख पड़ा राजपथ
धुंधली सी छाया दिखती"

Do Not Write anything in this Portion

वस्तुत: प्रसाद जी ने विषय एवं सर्ग के अनुरूप आकर रस की निष्पत्ति की है। जैसे श्रद्धा सर्ग में श्रृंगार का उत्तम प्रयोग है एवं इसी प्रकार से इड़ा में जहाँ बुद्धि / तर्क का वर्णन है वहाँ शांत रस का परिपाक है –
जैसे –
" मनु सुनो! ज्ञान एक बंधन है।"
अत: कामायनी में यथास्थान रसराज श्रृंगार के साथ, शांत रस भी पूर्णत: सशक्त रूप में सामने आया है। प्रसाद जी की काव्य साधना एवं

Paper Code

23

प्रतिभा को समर्पित कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कवि कोविद विज्ञान विशारद

कलाकार पण्डित ज्ञानी,

कनक नहीं कल्पना ज्ञान

उज्ज्वल कवित्व के अभिमानी।।

Do Not Write anything in this Portion

24

गद्य	कहानी	पत्र
→ बाल तुलसा	→ नील परिधान ✓	→ शिक्षा दो
→ करते तुलसीदास	→ किनारे के ख़त	→ प्रथम रश्मि
→ भक्ता जीवन	→ दूध की पिछली खामी ✓	→ छोड़ द्रुमों
→ नारी तुम केवल	→	→ न जाने नक्षत्रों
→ बूढ़ा फूल	→ दोनों निभानी पानी	→ यौवन रे वह
→ यही माता के संग	→ कौन तुम ✓	→ चींटी का दल
→ स्वाभ की लय	→ ✓ झा ...	→ परिवर्तन प्रिय
→ दीक्षित-दीपित स्वामिन	तुलसी की ...	→ ...
निर्मित ... जनान	→ ✓ ...	...

→ केवल लोक मन कर नाम

→ रतिई ..., ... की ... तृषित पानी

... अकेला, ... मौन अलोना सलोना ✓

→ ओ मेरी ... आग

कवि कोविद विजय निशान

→ ... - ... पर रही

→ जलाकर दिये

→

ROOM NO. 05
NO. of copies (05)

M.A. HINDI